शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

क्रिस्टीन स्वैंटन के बहुलवादी सदगुणधारित नीतिशास्त्र की समीक्षा

अंजील शर्मा
शोध छात्रा, दर्शनशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज
ईमेलः *anjalijtgdc@gmail.com*

प्राप्तिः 18.08.2021
स्वीकृतः 13.09.2021

सारांश

मनुष्य चरित्र में सद्गुणों के विकास की प्रक्रिया में बहुलवादी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस शोध–पत्र में क्रिस्टीन स्वैंटन के बहुलवादी सद्गुणाधारित नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण के स्वरूप व महत्व को समझने के लिए मैंने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार किया है। प्रथम खंड प्रस्तावना में इस प्रश्न पर संक्षेप में विचार किया गया है कि बहुलवादी सद्गुणाधारित नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण क्या है? द्वितीय खंड के अंतर्गत सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र क्या है और वर्तमान समय में वह किस प्रकार एक नए नैतिक विचार के रूप में सामने आया है इसकी संक्षिप्त व्याख्या की गई है। तृतीय समस्या यह है कि स्वैंटन बहुलवादी दृष्टिकोण को किस रूप में परिभाषित करती है? इस समस्या पर विचार शोध–पत्र के तृतीय खंड में किया गया है। अंतिम खंड में इस तथ्य पर विचार किया गया है कि स्वैंटन द्वारा प्रस्तुत बहुलवादी दृष्टिकोण की आलोचना दार्शनिक किस प्रकार करते हैं। इस प्रकार निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए शोध–पत्र को चार महत्वपूर्ण खंडों के अंतर्गत उपर्युक्त समस्या पर विचार किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य क्रिस्टीन स्वैंटन के बहुलवादी दृष्टिकोण के स्वरूप की व्याख्या करना एवं उनके द्वारा दिए गए सिद्धांत का आलोचनात्मक अध्ययन करना है।

मूल बिन्दु

सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र, बहुलवाद, नैतिक स्वीकृति, प्रतिक्रियात्मकता, लक्ष्य–केंद्रिकता।

प्रस्तावनाः–

स्वैंटन द्वारा लिखित पुस्तक *Virtue Ethics : A Pluralistic View*[1] कर्ता में सद्गुणों के विकास संबंधित जिस दृष्टिकोण पर आधारित है उसे बहुलवादी दृष्टिकोण (Pluralistic View) के रूप में जाना जाता है। जिसके अनुसार प्रत्येक सद्गुण विभिन्न परिस्थितियों व प्रसंगों में एक सुनिश्चित कर्म संपादन न करके अनेक कर्मों का संपादन करता है। स्वैंटन के मतानुसार 'सद्गुणी' होने के अनेक मार्ग हैं। अतः सद्गुण के अर्थ को ठीक–ठीक समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम किस प्रसंग में उसकी चर्चा कर रहे हैं क्योंकि जब हम विश्व के समग्र अस्तित्व के कल्याण की कल्पना करते है तो सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक विभिन्नता के कारण सद्गुणों की प्रतिक्रिया में भी भिन्नता होती है। इसलिए उसे किसी एक सिद्धांत या मानकीय आदर्श तक सीमित करना मनुष्य के चरित्र में बाधक सिद्ध होता है। इस दृष्टि से स्वैंटन का बहुलवाद नैतिकता की

व्यापक अवधारणा है जिसके अंतर्गत वे कर्तव्यवाद, उपयोगितावाद, यूडेमोनियावाद, नित्शेवाद, गहन मनोविज्ञान आदि विचारधाराओं को सम्मिलित करती है।

उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त पुस्तक में न केवल सद्गुण के स्वरूप की व्याख्या की गई है अपितु इस तथ्य की भी चर्चा की गई है कि 'एक अच्छा जीवन क्या है','मनुष्य किस प्रकार का कर्म करें जिससे उसका आचरण सद्गुणी कहलाए'। उनकी पुस्तक में कर्ता के उचित जीवन, सद्गुण की अभिव्यक्तियां, नैतिक स्वीकृतियों के रूप में प्रेम व सम्मान, रचनात्मकता, (जिसे स्वैंटन सद्गुण के आयाम कहती हैं), निष्पक्षता, विश्व की मांग आदि तत्वों का विस्तष्त वर्णन मिलता है। स्वैंटन की पुस्तक के संपूर्ण अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उनका दर्शन पर्यावरणीय नैतिकता (Environmental Ethics) के अत्यधिक करीब है। कारण कि वह सद्गुणों की चर्चा मात्र मानव के संदर्भ ने नहीं अपितु मानवेत्तर प्राणी, जड़–जगत्, निर्जीव–जगत, प्रकृति आदि के संदर्भ में भी करती हैं।

सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र : एक संक्षिप्त अवलोकनः–

प्राचीन यूनानी दर्शन (सुकरात, प्लेटो, अरस्तू) से प्राप्त पश्चिमी व गैर–पश्चिमी पारंपरिक विचारधारा में सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का स्थान प्राचीनतम नैतिक सिद्धांतों में से एक था। यद्यपि यह विषय प्राचीनकाल से चर्चा का विषय रहा है जिसकी शुरुआत सुकरात, प्लेटो और अरस्तू के दर्शन से होती है। प्लेटो अपनी रचना ***Republic*** में कहते हैं कि नैतिक अवधारणाओं की व्याख्या प्रत्यय–सिद्धांत के आधार पर की जाती है यानी, 'शुभ' एक सर्वोच्च अतिन्द्रिय प्रत्यय है और समस्त सद्गुणी कर्म इसी प्रत्यय की अनुकृतियां है।[2] इसी प्रकार अरस्तू की रचना ***The Nicomachean Ethics*** में भी सद्गुण से संबंधित महत्वपूर्ण चर्चा मिलती है। जिसमें वह कहते हैं:"Virtues are good habits of the heart (soul / Psyche) and mind (or learned dispositions) and are essential for developing and maintaining good ethical character and behaviour"[3] स्पष्टतः सद्गुण आत्मा और बुद्धि की अच्छी आदतें हैं जो उचित नैतिक चरित्र और व्यवहार को विकसित करने व बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

मध्यकाल में ईसाई पादरियों ने नैतिकता की धर्मशास्त्रीय विवेचना की। उस समय 'पवित्र आत्मा' के विचार को परम सद्गुण माना जाता था। परन्तु 18 वीं व 19 वीं शताब्दी में काण्टवादी तथा उपयोगितावादी सिद्धांतों के आगमन के परिणामस्वरूप नीतिशास्त्र में सद्गुण की चर्चा को प्रभावहीन कर दिया। नियम–आधारित (कर्तव्यवाद) और सुख–आधारित (उपयोगितावाद) सिद्धांत के विपरीत, सद्गुण की नैतिकता का मूलभूत प्रश्न 'मुझे कैसा कर्म करना चाहिए' (How should I act?) से संबंधित है। वर्तमान शताब्दी में, एंग्लो–अमेरिकन दर्शन में 1950 के दशक के अंत में सद्गुण की नैतिकता को पुनर्जीवित करने का श्रेय एलिजाबेथ एंसकॉम्बे के प्रभाव शाली लेख ***Modern Moral Philosophy*** को जाता है।[4] एंसकॉम्बे मानकीय नैतिक सिद्धांतों के अनुकरण की बजाय मानव चरित्र में सद्गुणों के संवर्धन पर बल देती हैं। उनका कहना है कि नीतिशास्त्र में कर्ता की चारित्रिक उच्चता प्राथमिक और नैतिक मानकों का कृत्रिम अनुपालन गौण है। इसलिए नैतिकता का मौलिक प्रश्न है कि 'मुझे किस प्रकार के चरित्र का व्यक्ति बनना चाहिए?', 'मेरा चारित्रिक गुण किस प्रकार का होना चाहिए?' आदि। इन प्रश्नों के सद्उत्तर से ही हम मूल्यपरक व्यावहारिक समस्याओं से संबंधित दुविधाओं में उलझेंगे नहीं। कारण कि सद्गुण की नैतिकता का पुनरुद्धार मुख्यतः एकवादी मानकीय सिद्धांत की प्रतिद्वंदिता के खिलाफ़ सिद्धांतवादिता बनाम सिद्धांतविरोधिता (Theory Vs. Anti-

Theory) के आंदोलन स्वरूप हुआ। इस आंदोलन में शामिल चिंतकों में जी0 ई0 एम0 एंसकाम्बे, एनेट बायर, स्टुअर्ट हैम्पशायर, बर्नार्ड विलियम्स, रार्बट ऑडी, अलासडेर मैकिंटायर, मार्था नुसबौम, जॉन मैकडॉवेल आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

नीतिशास्त्र में सिद्धांत बनाम सिद्धांतविरोधिता के विवाद का उद्देश्य आधुनिक युग की मानकीय नैतिक विचारधाराओं की त्रुटियों को उजागर करना है, मुख्यतः कर्तव्यवादी और उपयोगितावादी नैतिक सिद्धांतों की विचारधारा। ये दावा करते हैं कि नैतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए और नैतिक कर्मों के सफल मार्ग दर्शन के लिए हमें नैतिकता के मूलभूत सिद्धांतों पर निर्भर रहना चाहिए। अतः एकवादी मानकीय नैतिक सिद्धांतों की उपेक्षा और चरित्र को संवारने की नैतिकता सुकरात, प्लेटो, अरस्तू एवं सिद्धांत विरोधी अनेक चिंतकों का आह्वान है। इसी को समकालीन सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र (Virtue Ethics) कहते हैं। सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र के अंतर्गत मनुष्य के चारित्रिक सद्लक्षणों के संवर्धन, समावेशन तथा सद्गुणी होने के विधियों की विवेचना होती है। 'सद्गुण' मानव के 'सद्' व 'अच्छे' लक्षण का द्योतक है। 'सद्' व 'अच्छा' चरित्र जन्म से प्राप्त नहीं होता वरन् इसको हम संकल्पित उचित आचरणों से धीरे–धीरे अर्जित करते हैं। सद्गुण मनुष्य की वह चारित्रिक सद्प्रवर्त्ति है जो उसके मौलिक नैतिक अभिप्रायों को प्रतिबिंबित करती है यानी, अभिप्राय की शुद्धता से हम जो कर्म निरंतर करते हैं उन्हीं के परिणामस्वरूप सद्प्रवर्त्तियों का सष्जन होता है। अतः इसे दक्षता या क्षमता आदि लक्षण नहीं समझना चाहिए।

क्रिस्टीन स्वैंटन के अनुसार सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का स्वरूपः–

स्वैंटन द्वारा प्रतिपादित बहुलवादी दृष्टिकोण सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का नवोत्थान है। उनके नीतिदर्शन का मुख्य उद्देश्य आधुनिक युग के मानकीय सिद्धांतों की एकवादिता का खंडन करना है यानी, परंपरागत प्रचलन जो चला आ रहा है कि व्यक्ति के मूल्यपरक व्यवहारिक समस्या के समाधान हेतु किसी एक नियम या आदर्श को मानकर समस्या के समाधान करने का इस प्रचलन में स्वैंटन परिवर्तन लाना चाहती है। ध्यातव्य हो कि यह परिवर्तन सिद्धांत विरोधिता के रूप में नहीं अपितु सिद्धांतों की बहुलता के रूप में प्रस्तुत है।

स्वैंटन के मतानुसार, सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र एक व्यावहारिक विज्ञान है जो मनुष्य के सद्गुणात्मक जीवन जीने के महत्व की विवेचना करता है। दार्शनिकों ने नैतिक कर्ता के सद्गुणात्मक चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में कई प्रकार के सिद्धांतों की कल्पना करते है जैसे–कर्तव्यताद, उपयोगितावाद, प्रयोजनवाद, एकवाद, अनेकवाद आदि। यदि उपर्युक्त सिद्धांतों में से किसी एक को प्रमुख मानकर कर्ता उसकी दृष्टि से अपना चरित्र संवारे तो उसे एकवादी दृष्टिकोण (Monistic View) कहते हैं और यदि एक से अधिक सिद्धांतों को प्रमुख मानकर कर्ता अपने चरित्र का विकास करता है तो उसे बहुलवादी दृष्टिकोण (Pluralistic View) कहते हैं। स्वैंटन नैतिकता के क्षेत्र में बहुलवादी दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं। उनके अनुसार मनुष्य के चरित्र निर्माण में एकवादी दृष्टिकोण के आदर्शों के अनुरूप आचरण करना मनुष्य के चरित्र विकास में बाधक होता है क्योंकि सद्प्रवृत्तियों के संवर्धन की बात मात्र कर्तव्य, प्रयोजन, उपयोगिता, कल्याण, प्रेरणा आदि को केंद्र में अवस्थित कर नहीं की जाती, बल्कि नैतिक कर्ता के सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक, आदि भिन्नता के मद्देनज़र सद्प्रवृत्तियों के संवर्धन की विवेचना की जाती है। अतः मनुष्य में सद्गुणों के विकास की प्रक्रिया को एकवादी दृष्टिकोण तक सीमित करना उसके अन्य विधियों की उपेक्षा करना है।

स्वैंटन सद्गुण को परिभाषित करते हुए लिखती हैं" A virtue is a good quality of character, more specifically a disposition to respond to, or acknowledge, items within its field or field in an excellent or good enough way"[5] अर्थात सद्गुण चरित्र का एक अच्छा लक्षण है। विशेषतः यह चारित्रिक वृत्ति या सद्लक्षण है। उत्कृश्ट तरीके से प्रतिक्रिया का लक्षण है। यह प्रतिक्रिया अपने क्षेत्र की परिधि में वस्तुओं को स्वीकार करने का एक स्वभाव है। मानवीय सद्गुण व दुर्गुण का उद्भव हमारी नैतिक स्वीकृति या अस्वीकृति से होता है। इसलिए स्वैंटन के नीति–दर्शन में नैतिक स्वीकार्यता (Moral Acknowledgement) की केंद्रीय भूमिका है जिसके अंतर्गत सार्वभौमिक प्रेम, ग्रहणशीलता, प्रशंसा, स्वार्थपरकता, आत्म–सम्मान, सार्वभौमिक सम्मान और रचनात्मकता के तत्व शामिल हैं। नैतिक स्वीकार्यता के तरीकों के संबंध में स्वैंटन नैतिक प्रतिक्रिया का उल्लेख करती हैं यानी, सद्गुण के माध्यम से किस प्रकार की प्रतिक्रिया हो सकती है और मनुष्य किस प्रकार की प्रतिक्रिया करता है इसका विवेचन होता है। उदाहरण के लिए, 'प्रेम' संबंधपरक बंधनों के प्रति प्रतिक्रिया है, 'सम्मान' किसी विशेष स्थिति को दर्शता है, इसी प्रकार 'उदारता' लाभ की ओर उन्मुख होती है। इस प्रकार व्यक्ति सद्गुण के माध्यम से अपने भीतर की भावना के अनुरूप प्रतिक्रिया करता है जिसे स्वैंटन प्रतिक्रिया या अनुक्रियाशीलता के रूप (mode of responsiveness) कहती है। स्वैंटन आगे कहती हैं कि "A virtue is a disposition to respond appropriately to a plurality of values, where neither the values nor the appropriateness of the response can be reduced or explained in monistic terms"[6]। आशय की सद्गुण मूल्यों की बहुलता के प्रति उचित रूप से प्रतिक्रिया देने का स्वभाव है, जहाँ न तो मूल्यों और न ही प्रतिक्रिया की औचित्य को कम किया जा सकता है और न ही इसे एकवादी रूप में समझा जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि स्वैंटन अरस्तू के यूडेमोनियावाद को अस्वीकार करती हैं। वह सद्गुण की व्याख्या 'खुशी' या 'आनंद' की दृष्टि से नहीं करती है। स्वैंटन के अनुसार कल्याणवादियों का मानना है कि कल्याणपरक सद्गुणी आचरण करना साधन है जिसका साध्य है कल्याण होना। अरस्तू के अनुसार मनुष्य के जीवन में आनंद या कल्याण (यूडेमोनिया) की प्राप्ति श्रेष्ठ लक्ष्य है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को सद्गुण के अनुरूप आचरण करना चाहिए। यूडेमोनिया की प्राप्ति सद्गुणी आचरण से होती है। अर्थात् सद्गुण ऐसा साधन है जो हमें आनन्द नामक साध्य की प्राप्ति में मदद करता है। स्वैंटन अरस्तू के इस मत को अस्वीकार करते हुए कहती हैं कि मनुष्य का सद्गुणयुक्त आचरण उसके इस लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक तो है किंतु वह स्वयं अंतिम ध्येय नहीं हो सकता। सद्गुण का संबंध प्रशंसनीय होने एवं सार्थक जीवन में सहयोगी होने से है न कि कल्याण होने से। अतः स्वैंटन के नीति दर्शन में नैतिक कर्ता के लिए सद्गुणात्मक जीवन की प्राप्ति साध्य है साधन नहीं। स्वैंटन का मानना है कि कई बार सद्गुणात्मक आचरण करने और कल्याण होने में अनिवार्य साधन–साध्य का संबंध नहीं होता क्योंकि कई बार सद्गुणी आचरण करने वाले दुर्भाग्य से कल्याण प्राप्त नहीं करते हैं। किंतु अरस्तू की ये आलोचनाएँ स्वैंटन को वास्तव में अरस्तू से दूर नहीं ले जाती। उदाहरण के रूप में उन्होंने कहा है कि "A correct conception of the virtues must be at least partly shaped by a correct conception of healthy growth and development which in part constitute our flourishing"[7] स्पष्टतः सद्गुणों का

विकास अंशतः व्यक्ति के स्वास्थ्य विकास एवं उसके कल्याण में सहायक होता है। इसे स्वैंटन व्यक्ति के बुद्धिमत्ता से जोड़कर देखती हैं।

स्वैंटन का मानना है कि नीतिशास्त्रियों ने कई वर्षों से अरस्तू के नैतिक सिद्धांत को एकमात्र मॉडल मानकर सद्‌गुणाधारित नीतिशास्त्र को विकसित करने का प्रयास किया है। परन्तु स्वैंटन ने सद्‌गुण की नैतिकता को विकसित करने में अरस्तू के साथ–साथ अन्य विचारकों जैसे ह्यूम, नित्शे, हाइडेगर, काण्टवादी, परिणामवादी तथा गहन मनोविज्ञान आदि के विचारों को समावेशित करने का प्रयास करती है स्वैंटन इस संदर्भ में कुछ उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। जैसे, अरस्तू के नीतिदर्शन का श्रेष्ठ लक्ष्य आनंदमय क्रियाशील जीवन (यूडेमोनिया) की प्राप्ति है। जिसके अन्तर्गत ऐसे कर्म की चर्चा होती है जो अपने आप में स्वतः संपूर्ण है, वह किसी भौतिक अवस्था का द्योतक नहीं है न ही किसी विशेष मानसिक अवस्था का परिचायक है। यूडेमोनिया उन कर्मों की निरंतरता से उपलब्ध अवस्था के अंतर्गत आता है जो अपने आप में वांछनीय कर्म है। इसी क्रम में नित्शे अपने दर्शन में कई अलग–अलग मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। वह अपने सिद्धांत 'शक्ति की इच्छा' के आधार पर 'मूल्यों के मूल्यांतरण' के महत्वपूर्ण विचार को प्रस्तुत करते हैं। जिसका तात्पर्य ज्ञात मूल्यों का परीक्षण और मूल्यांकन करना तथा नए मूल्यों की खोज करना है। उनके अनुसार जीवन के मूल्य, संस्थाएं या परंपरा अनुकूल नहीं है। इसके स्थान पर वे नवीन मूल्य और संस्थाओं तथा परंपराओं को स्थापित करना चाहते हैं। नवीन मूल्य की स्थापना से तात्पर्य यह नहीं है कि वह प्राचीन मूल्यों की आलोचना करते हैं अपितु उनका कहना है कि प्राचीन मूल्यों में जो कसौटी पर खरा उतरे उनको ग्रहण करना चाहिए। नीत्शे प्राचीन मूल्यों में कुछ महान मूल्य जैसे बुद्धिमत्ता, शौर्य, साहस, आत्मसंयम, न्याय आदि का उल्लेख करते हैं। वहीं गहन मनोविज्ञान के अर्न्तगत क्रमबद्ध रूप से व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन होता है तथा कर्ता के मानसिक एवं दैहिक प्रक्रियाओं जैसे चिन्तन, भावना आदि तथा वातावरण की घटनाओं के साथ उनका सम्बन्ध का संघटित अध्ययन करता है। स्वैंटन पर्यावरणीय सद्‌गुण की नैतिकता से अत्यधिक प्रभावित हैं। पर्यावरणीय नीतिशास्त्र व्यावहारिक दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जिसके अंतर्गत पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित नैतिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। पर्यावरणीय नैतिकता इस विश्वास पर आधारित है कि मनुष्य के साथ–साथ पृथ्वी के जैवमंडल में निवास करने वाले विभिन्न जीव–जंतु, पेड़–पौधे भी इस समाज का हिस्सा हैं। सभी प्राकृतिक पदार्थों का मूल्य अंतर्निहित है अतः मानव को उसका सम्मान करना चाहिए।

इस प्रकार स्वैंटन अपने दर्शन में विभिन्न प्रकार की दार्शनिक विचारधाराओं को सम्मिलित करने का प्रयास करती हैं। उनके अनुसार नैतिक निर्णय का विषय मात्र इच्छा की शक्ति, भावना, प्रयोजन, परिणाम, कर्तव्य आदि नहीं हो सकता। कारण है कि सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक सापेक्षता के कारण प्रत्येक जगह के मूल्य व सद्‌गुणों में भिन्नता होती है। इसलिए यह संभव नहीं है कि हम एक ऐसे नियम को स्थापित करें जो सार्वभौमिक रूप से लागू हो। वास्तव में किसी कर्म के नैतिक निर्णय के लिए कर्ता के पूरे अभिप्राय यानी, भावनाओं, मनोवेगों, कर्तव्य, प्रयोजन, परिणाम इच्छा आदि का विचार समाहित रहता है। स्वैंटन का मानना है कि किसी एक मानकीय आदर्श के द्वारा मानवीय चरित्र में सद्‌गुण के समावेशन की प्रक्रिया कल्पना मात्र है। उदाहरणतः प्रयोजनवादियों का मानना है कि किसी कर्म के औचित्य व अनौचित्य का निर्धारण उसके प्रयोजन पर आधारित होता है। इस संदर्भ में स्वैंटन कहती हैं कि कर्ता का प्रयोजन उचित है या अनुचित यह जानना संभव नहीं

है क्योंकि यह एक मानसिक धारणा है। एक डकैत भी तो यह दावा कर सकता है कि 'मेरा प्रयोजन अच्छा था क्योंकि मैने यह चोरी गरीबों की सहायता के लिए की थी'। परन्तु हम उसके प्रयोजन के आधार पर उसके कार्य को उचित नहीं कह सकते हैं। इसी प्रकार कांटवादी कहते हैं कि 'कर्तव्य के लिए कर्तव्य' की दृष्टि से किया गया कर्म सद्गुणी होता है। परंतु मात्र कर्तव्य की कसौटी के आधार पर सद्–असद्, शुभ–अशुभ के सार्वभौमिक नियम की स्थापना नहीं की जा सकती। अतः स्वैंटन के मतानुसार नैतिक कर्ता के संपूर्ण मनोभावों से परिचित होने के लिए उसके मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक आदि तत्वों का ज्ञान होना आवश्यक है ताकि हम मूल्यपरक व्यावहारिक समस्या के समाधान के लिए किसी एक मापदंड के अनुरूप आचरण करने के लिए प्रेरित न होकर नैतिकता के सम्पूर्ण संदर्भ को समझ सकें।

स्वैंटन का मानना है कि मनुष्य चरित्र में सद्गुणों का विकास मात्र अरस्तू की भांति आनंदमय जीवन की प्राप्ति करना, काण्ट की भाँति कर्तव्य की भावना, परिणामवादियों के अनुसार अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख आदि मानकीय सिद्धांत ही एकमात्र अवधारणा नहीं है। इन दार्शनिकों ने किसी एक विधि को अपना कर नैतिकता के क्षेत्र को सीमित कर दिया है। यद्यपि यह सत्य की मनुष्य में सद्गुणों के विकास के लिए व्यक्ति का प्रयोजन, इच्छा, कल्याण का विवेचन केंद्रीय विषय है परन्तु इसके साथ ही कर्म की प्रयोजनीयता, भावनात्मकता, संवेग, आंतरिक सद्वृत्ति, व्यक्ति विशेष का चरित्र आदि दृष्टिकोण की भी महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि जब हम विश्व के समग्र अस्तित्व को सर्वांग कल्याण की कल्पना करते हैं तो सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिक विभिन्नता के कारण सद्गुण की प्रतिक्रिया में भी भिन्नता होती है। अतः उसे किसी एक क्रिया तक सीमित कर देना नितांत अनुचित है। इस सदर्भ में स्वैंटन तर्क देती हैं–"Goods such as victory, knowledge and pleasure should not be seen as intrinsic value that contribute the same value to a whole no matter the context"[8]। स्पष्टतः विजय, ज्ञान, और आनंद जैसी वस्तुओं को मात्र आंतरिक मूल्य के संदर्भ में नहीं समझना चाहिए क्योंकि ये मूल्य प्रत्येक संदर्भ में समान रूप से मूल्यवान नहीं होते वरन् परिस्थिति सापेक्ष है। इस प्रकार स्वैंटन का बहुलवादी सिद्धान्त नैतिकता की व्यापक अवधारणा को प्रस्तुत करता है जिसके अन्तर्गत वह नैतिक सिद्धांतों की अनेक विचारधाराओं के एकीकरण का प्रयास करती हैं, जिसमें न केवल जीव–जगत यानी, मनुष्य एवं समाज के कल्याण की विवेचना की जाती है, अपितु जड़ जगत् के सर्वांग कल्याण पर भी विचार होता है।

उल्लेखनीय है कि स्वैंटन 'सद्गुणी कर्म' (virtuous act) और 'सद्गुणी क्रिया' (action form virtue) के मध्य अंतर करती हैं। उनके अनुसार "Rightness of action is tied not to action form virtue but a virtuous act"[9] स्पष्टतः कर्म का औचित्य सद्गुणी क्रिया से नहीं बल्कि सद्गुणात्मक कर्म से संबंधित होता है। सद्गुणात्मक कर्म मनुष्य का अभिप्राय मूलक कर्म है जिसके सम्पादन से सद्गुणों का संवर्धन होता है। व्यक्ति की सद्प्रवृत्तियां जैसे, भावना, क्षमता, इच्छा, व्यवहार आदि मनुष्य की मानसिक अन्तश्चेतना पर निर्भर करती हैं जिसे स्वैंटन कार्यात्मक मनोविज्ञान (Functional Psychology) की संज्ञा देती हैं। वह अरस्तू की भांति यह मानती हैं कि उचित नैतिक जीवन वह है जो हमारी सद्प्रवृत्तियों को उसकी पूर्ण क्षमता तक विकसित करें जिससे हम जीवन के श्रेष्ठ शुभ (कल्याण) को प्राप्त कर सकें। किंतु स्वैंटन यह भी स्वीकारती है कि नैतिकता दृढ़ मनोविज्ञान पर आधारित होती है क्योंकि अन्तश्चेतना के बिना हम कर्मों के औचित्य व अनौचित्य

का निर्धारण नहीं कर सकते, यानी, कौन सा कर्म 'सद्गुणी' है और कौन सा कर्म 'असद्गुणी' है इसका ज्ञान हमें हमारी अन्तश्चेतना द्वारा होता है। इस संदर्भ में स्वैंटन लिखती हैं "Intuitions about the virtuousness of traits, grounded in their admirability can be accounted for by appeal to the idea of expressiveness"[10] अर्थात चारित्रिक लक्षणों का सहज–ज्ञान, उन लक्षणों की प्रशंसनीयता पर आधारित होता है। यह ज्ञानव्यक्ति के उत्कर्ष पर आधारित विचारों की अभिव्यक्ति से प्राप्त होता है। चारित्रिक विषेशताएं जो किसी कर्म को सद्गुणी बनाती हैं, वे अभिव्यक्त होने के साथ–साथ अन्य मनुष्यों के लिए प्रेरणादायी होती हैं। किंतु व्यक्ति के कल्याण मात्र तक सीमित नहीं होती हैं। इस प्रकार स्वैंटन का बहुलवादी चिंतन मानव स्वभाव में निहित चैतन्य–वृत्ति की क्रियात्मकता पर आधारित है। मानसिक चेतना ही कर्म का प्रेरक स्रोत है। यह सद्लक्षण नैतिक आचरण व निर्णयों के शुभत्व को गतिशीलता प्रदान करती है और व्यक्ति कल्याण और लोककल्याण दोनों के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

समीक्षाः–

स्वैंटन के नीति–दर्शन में कई विषेशताओं के होने के बावजूद बहुत से चिन्तकों ने उनके नैतिक दर्शन के विरुद्ध कई आपत्तियां उठाई हैं। पहली आपत्ति स्वैंटन के द्वारा प्रस्तुत 'सद्गुण की परिभाषा' से संबंधित है। स्वैंटन के अनुसार सद्गुण चरित्र की एक उत्कृष्ट गुणवत्ता है जो उसे उसके स्वभाव यानी, उसके क्षेत्र के अनुरूप उत्कृष्ट तरीके से प्रतिक्रिया देने की प्रवषत्ति है। इस परिभाषा में दो विषेशताएं ध्यान देने योग्य हैं। पहला, स्वैंटन 'विषयों' (items) एवं 'क्षेत्रों' (field) की व्याख्या बहुत व्यापक रूप से करती हैं। विशेष रूप से वह सभी को विषयों के अंतर्गत सम्मिलित करती हैं जैसे, व्यक्ति, वस्तुएं परिस्थितियां, आंतरिक स्थिति या कर्म, जिसमें 'अमूर्त वस्तुएं' जैसे ज्ञान या सौंदर्य, 'प्राकृतिक वस्तुएं' शामिल हैं, जो पर्यावरणीय सद्गुणों से संबंधित है।

चिंतकों का कहना है कि स्वैंटन दावा करती हैं कि उनके सद्गुण की व्याख्या सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र एवं सद्गुण के सैद्धांतिक व्याख्याओं के मध्य तटस्थ व्याख्या है। किंतु उनकी यह धारणा तीन कारणों से जटिल सिद्ध होती है। पहला, कारण कि स्वैंटन द्वारा प्रस्तुत सद्गुण की परिभाषा अत्यंत अनुज्ञापक (Permissive) धारणा है। यह अनुज्ञापकता, सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र में सद्गुण की भूमिका को तुच्छ कर देता है। स्वैंटन इसकी भरपाई करने के लिए परिभाषा में कुछ विषयों एवं क्षेत्रों के प्रति हमारी अनुक्रियात्मक वृत्ति का उल्लेख करती है किंतु यह स्पष्ट नहीं होता है कि उनकी यह व्याख्या किस कारण एक सुस्पष्ट सद्गुणाधारित नीतिशास्त्रीय व्याख्या है। दूसरी ओर, स्वैंटन की परिभाषा में अंतर्लीन तटस्थता जो अत्यन्त अनुज्ञापक है, वह अन्य सद्गुणाधारित व्याख्याओं से सैद्धांतिक रूप में दुर्बल हो जाती है क्योंकि सद्गुण को विशिष्ट रूप देने का प्रयास न कर बहुलवादी व्याख्या की गई है। दूसरा कारण यह भी प्रतीत होता है कि उनकी परिभाषा एक सीमा तक अननुज्ञापक (not permissive) है क्योंकि उन्होंने अपनी परिभाषा में सद्गुण को नैतिक कर्ता, विषय और क्षेत्र (agents, items and fields) तक सीमित कर दिया है। किंतु इस सीमायन का कारण स्पष्ट नहीं होता। मात्र एक स्थान पर वह इंगित करती हैं कि सद्गुण की परिभाषा साधनवादी ढंग से करना उचित नहीं है, यानी, सद्गुण की परिभाषा आंतरिक शुभों के साध्य के साधन के रूप में नहीं करनी चाहिए। फिर भी यह स्पष्ट नहीं होता कि उन्होंने किस कारण से सद्गुण की परिभाषा करने में मात्र कर्ता, विषय व क्षेत्र तक उसे सीमायित किया। और तीसरा, परिभाषा की समस्या यह

भी है कि उससे सद्गुणों का विशेषीकरण (individuation) स्पष्ट नहीं होता। उन्होंने सद्गुण का विशेषीकरण न कर उसे अति उन्मुक्त एवं अस्पष्ट बना दिया है। वह यह नहीं बताती कि किन सद्गुणों को विशेषित किया जाए। सद्गुणों का विशेषिकरण न होने के कारण यह पता नहीं चलता कि सद्गुण अखंड हैं जिसके कई आयाम हैं या उन्हें खंड–खंड कर देखा जा सकता है।[11]

दूसरी आलोचना यह है कि स्वैंटन ने सद्गुण के स्वरूप की व्याख्या करते हुए उसे मानव की आंतरिक वृत्ति कहा जो कई रूपों में वह जो उत्कृष्ट है, जो निर्दिष्ट विषय या वस्तु के प्रति व्यक्त होती है, जैसे, सम्मान करना, प्रशंसा करना, सृष्टि करना, प्रेम करना, उत्पादन करना आदि है। स्वैंटन ने आदि कह कर उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों को पूर्णतः नहीं बताया। न ही वह यह स्पष्ट करती हैं कि इन अभिव्यक्तियों में क्या है कि उन्हें उत्कृष्ट कहा जाएगा। बाद में उन्होंने कुछ व्यावहारिक निर्देश दिए हैं ताकि सद्गुणात्मक आचरण से संबद्ध मतभेद का निराकरण हो सके। किंतु मतभेद दूर कैसे हो सकता है यदि इस विषय पर असहमति हो कि सद्गुण क्या है?[12]

कई आलोचकों का यह भी तर्क है कि सद्गुण की स्वीकृति व अस्वीकृति कर्ता की आंतरिक अवस्थाओं पर निर्भर करती है। स्वैंटन का यह मत, त्रुटिपूर्ण है। कारण कि अन्य मानकीय सिद्धांत जैसे परिणामवाद और कर्तव्यवाद भी दावा करता है कि सद्गुण कतिपय आंतरिक अवस्थाओं को अभिव्यक्त करता है, तो प्रश्न उठता है कि स्वैंटन का बहुलवाद अन्य मानकीय सिद्धांतों से अलग कैसे है? इसका उत्तर देते हुए राबर्ट ऑडी कहते हैं कि नैतिक कर्ता में सद्गुणी कर्म करने की 'स्थायी प्रतिबद्धता' (standing commitment) होता है जो उसे अन्य मानकीय सिद्धांतों से भिन्नता प्रदान करता है क्योंकि उन सिद्धांतों में मात्र मापदंड के अनुरूप आचरण करना ही सद्गुणात्मक है। रार्बट ऑडी के शब्दों में " The basic normative aims of moral agent are aretaically determind by the requirments of acting from virtue as opposed to being dictated by a commitment of following certain deontic rules"[13]

इसके अतिरिक्त कुछ दार्शनिक स्वैंटन के सद्गुणाधारित चिंतन में बहुलवादी दृष्टिकोण को भ्रमात्मक मानते हैं। स्वैंटन की उन्मुक्त व अनुज्ञापक परिभाषा उनके बहुलवादी विचार का आधार है। इसके परिणाम स्वरूप उनका विचार विभिन्न प्रकार के नैतिक सिद्धांतों के विचारों को जैसे कान्टीय, परिणामवादी, गहन मनोविज्ञान तथा नित्सेवादी नैतिक सिद्धांतों को समावेशित करने का प्रयास करता है। किन्तु इस का परिणाम यह होता है कि उनका सद्गुणाधारित नैतिक विचार नैतिक कर्मों के दिशा–निर्देश करने में पूर्णतः विफल हो जाता है। कारण कि नैतिक निर्णय की प्रक्रिया में यह सिद्धांत कोई एक निश्चित मानक प्रस्तुत नहीं करता, परिणामतः नैतिक प्रश्न प्रतिस्पर्धात्मक रूप ले लेता है और नैतिक निर्णय की प्रक्रिया को जटिल बना देता है। अर्थात बहुलवादी पक्ष लेने के कारण महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि स्वैंटन के सदगुण विचार को ठीक किस रूप में समझा जाए। इससे दुर्बोध्यता उत्पन्न होती है। इस संदर्भ में स्टीफन गार्डिनर कहते हैं कि यद्यपि स्वैंटन चाहती है कि वे अपने विचारों को एक नवीन व परिवर्तनात्मक रूप दें, किंतु इसमें वे सफल नहीं होती हैं।[14]

निष्कर्षः–

स्वैंटन के नीति–दर्शन में कुछ कमियों के होते हुए भी उनकी गणना समकालीन युग के विख्यात विचारकों में की जाती है। उनका दर्शन समकालीन नैतिक विचारधारा को एक नया रूप

प्रदान करता है, जिसमें उन्होंने आधुनिक युग के नीति–विचार की कमियों को दूर कर एक संशोधित व परिष्कृत रूप प्रदान किया है। स्वैंटन के सदगुणाधारित नीतिशास्त्र की महत्ता इससे अधिक बढ़ जाती है कि वे मनुष्य चरित्र में सद्गुणों के विकास की प्रक्रिया के अंतर्गत बहुलवादी दृष्टिकोण की समर्थक हैं जिसमें किसी एक सिद्धांत को प्रमुख मानकर कर्ता अपना चरित्र नहीं संवारता, बल्कि एकाधिक सिद्धांतों को प्रमुख मानकर उसके अनुरूप अपने चरित्र में सद्गुणों का अंतर्वेशन करता है। कुल मिलाकर किसी न किसी सद्गुण की दृष्टि से कर्म का मूल्यायन होता है। यही स्थायी प्रतिबद्धता है जो मानकीय प्रतिबद्धता की सीमा एवं कृत्रिमता से भिन्न है।

संदर्भ–ग्रंथः–

1. Swanton, C.(2003). ***Virtue Ethics : A Pluralistic View*** . New York : Oxford University Press.
2. Plato. (1955). ***The Republic*** . Lee, H.D.P. (Trans). London : Penguin.
3. Papouli, E. (2018). "Aristotle's virtue ethics as a conceptual framework for the study and practice of social work in modern times". ***European Journal of Social Work*****. 1-16**.
4. Anscombe, G.E.M. (1958). "Modern Moral Philosophy". ***Philosophy 33*****. 1-19**.
5. Swanton, C.(2003). ***Virtue Ethics*** *: A Pluralistic View*. op.cit.19.
6. Mason, E. (2005). " Virtue Ethics : A Pluralistic View". ***Utilitas : Cambridge Journals.*** **231-233.**
7. Swanton, C.(2003). ***Virtue Ethics : A Pluralistic View*** . op.cit.60.
8. Mason, E. (2005). ***" Virtue Ethics : A Pluralistic View"***.op.cit.
9. Swanton, C.(2003). ***Virtue Ethics : A Pluralistic View*** . op.cit. 231.
10. Swanton, C.(2003). ***Virtue Ethics : A Pluralistic View*** . op.cit. 94.
11. Gardiner, S. (2005). ***" Virtue Ethics : A Pluralistic View".Mind Association.*** Vol.114. **207-212.**
12. Morrisson, I. (2004). ***" Virtue Ethics : A Pluralistic View". Cambridge Journals*****.** http://journals.cambridge.org/KRV
13. Audi, R. (1997). ***Moral Knowledge and Ethical Character*****.** New York: Oxford University Press. 180.
14. Gardiner, S. (2005). **" Virtue Ethics : A Pluralistic View".** Op.cit.